पश्चिम बंगाल राज्य दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 20 जून 2024, गुरुवार	समय : 5:00 PM	स्थान : रॉयल ग्लोबल स्कूल, गुवाहाटी

- सभी उपस्थित महानुभाव तथा
- पश्चिम बंगाल के मेरे प्यारे भाइयो और बहनो,

नमस्कार !

1. सबसे पहले तो मैं पश्चिम बंगाल राज्य के स्थापना दिवस के इस आनंदमय अवसर पर आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।

भारत सरकार की श्रेष्ठ पहल 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अन्तर्गत असम राजभवन को आज पुनः पश्चिम बंगाल का स्थापना दिवस आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

राज्य स्थापना दिवस के आयोजन का उद्देश्य एक-दूसरे राज्य की कला एवं संस्कृति को समझना और अनेकता में एकता की हमारी समृद्ध विरासत की सराहना करना है। ऐसे आयोजन निश्चय ही एकता और राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

आज के दिन का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि यह दिन हमें पश्चिम बंगाल का समृद्ध इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और राज्य द्वारा हमारे महान राष्ट्र के लिए किए गए उल्लेखनीय योगदान को याद करने का अवसर प्रदान करता है।

2. देवियो और सज्जनो,

बंगाल ने प्राचीन काल से साम्राज्यों के उत्थान और पतन, विभिन्न राजवंशों के प्रभाव और विविध संस्कृतियों का समावेश देखा है।

'बंगाल' का नाम प्राचीन राज्य 'वंग' या 'बंग' से लिया गया है। कभी मगध साम्राज्य का हिस्सा रहा बंगाल महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध के समय भारत के चार प्रमुख राज्यों में से एक था, जिसके तहत कई जनपद थे।

प्राचीन ग्रीस ने लगभग 100 ई. पूर्व बंगाल को 'गंगारीदाई' का नाम दिया, जिसका तात्पर्य ऐसी धरती से है, जिसके हृदय में गंगा है। बंगाल का पहला स्वतंत्र राजा शशांक था, जिसने 7वीं सदी की शुरुआत में शासन किया।

इस क्षेत्र में लगभग 400 वर्षों तक बौद्ध अनुयायी पाल वंश का शासन रहा। इसके बाद यहां एक छोटी अवधि के लिए हिन्दू सेन वंश का शासन भी रहा।

16वीं शताब्दी में मुगलकाल के प्रारंभ में बंगाल पर अनेक मुगल शासकों और सुल्तानों ने शासन किया। इनके बाद आधुनिक बंगाल का इतिहास यूरोपीय तथा अंग्रेजी व्यापारिक कम्पनियों के आगमन से आरंभ होता है। वर्ष 1757 में प्लासी के युद्ध ने इतिहास की धारा को मोड़ दिया, जब अंग्रेजों ने भारत में पहले-पहल बंगाल में अपने पांव जमाए। वर्ष 1905 में राजनीतिक लाभ के लिए बंगाल का विभाजन कर दिया गया।

कहना न होगा कि भारत की आज़ादी के इतिहास के कई पहलुओं पर पर्याप्त शोध की ज़रूरत है, जिनमें एक पहलू यह भी है कि कैसे 1905 में बंगाल के विभाजन के खिलाफ पूरे देश ने विरोध किया, लेकिन चार दशक बाद 1947 में जब देश का विभाजन हुआ तो लोग मूकदर्शक बने रहे।

3. किसी देश को धर्म, जाति या भाषा के आधार पर नहीं बांटा जाना चाहिए। राष्ट्र सर्वोच्च है, राष्ट्र सबसे पहले है। यह बात हर भारतवासी के दिल में होनी चाहिए। विविधता हमारे देश की ताकत है, लेकिन दुर्भाग्य से समय के साथ इसे कमजोरी बनाने की कोशिश की गई। स्थापना दिवस हमें ऐसी ताकतों से सजग और सावधान रहने को प्रेरित करता है, जो देश को कमजोर करने के लिए प्रयासरत हैं।

4. जब हम इतिहास के पन्नों को पलटते हैं तो पाते हैं कि पश्चिम बंगाल ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बंगाल के साथ ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस, स्वामी विवेकानन्द, अरबिन्दो, रवींद्रनाथ टैगोर और सुरेंद्रनाथ बनर्जी जैसी महान विभूतियों के नाम गर्व और प्रशंसा के साथ प्रतिध्वनित होते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वतंत्रता के लिए न केवल निडरता से संघर्ष किया, बल्कि लाखों लोगों को संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित भी किया।

5. देवियो और सज्जनो,

आत्म-सम्मान तथा राष्ट्र-गौरव के लिए मर-मिटने की भावना बंगाल की विशेष पहचान रही है। केवल 18 वर्ष की अल्पायु में भारत माता की आन-बान के लिए फांसी पर चढ़ने वाले खुदीराम बोस से जुड़ा यह गीत बंगाल का बच्चा-बच्चा आज भी गाता है :

ऐक बार बिदाई दे माँ, घूरे आशी,

हांशी-हांशी पोरबो फांशी, देखबे भारोतबाशी।

खुदीराम बोस सहित बिनय-बादल-दिनेश, राश-बिहारी बोस और श्री औरोबिंदो जैसे अनेक शूरवीरों तथा मातंगिनी हाजरा एवं कल्पना दत्ता जैसी अनेक वीरांगनाओं की जन्म-दात्री बंग-भूमि को मैं सादर नमन करता हूँ। महान कवि-नाट्यकार श्री द्विजेंद्र लाल राय के गीत **'धन-धान्य पुष्प भरा, आमादेर एइ बोशुंधरा'** की ये कर्णप्रिय पंक्तियां सभी भारतवासियों के राष्ट्र-गौरव को अभिव्यक्त करती हैं

एमोन देश् टी कोथाओ खूजे, पाबो नाको तूमी

शोकोल देशेर रानी शेइ जे, आमार जोन्मो-भूमी

6. देवियो और सज्जनो,

आधुनिक इतिहास में भारतीय नव-जागरण की ज्योति जगाने वाले राजा राममोहन राय और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के हम सदैव ऋणी रहेंगे। त्याग और बलिदान, संस्कृति और शिक्षा इस बंग-भूमि के जीवन आदर्श रहे हैं। बंगाल की धरती ने जहां एक ओर अमर क्रांतिकारियों को, तो दूसरी ओर विश्व-स्तर के वैज्ञानिकों को जन्म दिया है।

राजनीति से न्याय व्यवस्था तक, विज्ञान से दर्शन तक, अध्यात्म से खेलकूद तक, संस्कृति से व्यापार तक, पत्रकारिता से साहित्य, सिनेमा, संगीत, नाटक, चित्रकला तथा अन्य कला विधाओं तक अनेक क्षेत्रों में नये मार्गों का संधान करने वाली बंगाल की विलक्षण प्रतिभाओं की फेहरिस्त बहुत लम्बी है। सभी का उल्लेख करना तो संभव नहीं है।

लेकिन देश की राजनीति को सन्मार्ग पर ले जाने वाले देशबन्धु चितरंजन दास और डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे बंगाल के सपूतों का स्वत: ही स्मरण हो जाता है।

7. बंगाल को इसलिए भी याद किया जाता है, क्योंकि यहां हमें श्री रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित बेलूर-मठ में प्रवाहित दिव्य-चेतना की धारा में अवगाहन करने का अवसर मिलता है।

माँ गंगा के एक तट पर दक्षिणेश्वर और दूसरे तट पर बेलूर-मठ, दो आध्यात्मिक दीप-स्तंभों की तरह मानवता को आलोकित कर रहे हैं। नवद्वीप से नीलांचल की ऐतिहासिक यात्रा करने वाले श्री चैतन्य महाप्रभु ने ईश्वर भक्ति और मानव-प्रेम की जो शिक्षाएं दी हैं, वे सदैव हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

8. आज हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। भारत-माता के गौरव-गान तथा स्वाधीनता-संग्राम के ओजस्वी मंत्र रूपी राष्ट्र-गीत **'वंदे मातरम्'** के रचयिता बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय बंगाल के ही सपूत थे, जो आज़ादी की लड़ाई के लिए आदिकवि बने।

आधुनिक युग में एक नई मानव-चेतना जागृत करने वाले कवि-गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने देशवासियों को **'जन-गण-मन'** के राष्ट्र-गान का अद्‌वितीय उपहार दिया है। बंगाल की यही धरती **'जय हिन्द'** का राष्ट्रीय जन-घोष करने वाले उत्कल-बंग के संगम-स्वरूप नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रमुख कर्म-स्थली भी रही है।

9. मित्रो,

इस अवसर पर मैं मातृ-शक्ति की ऊर्जा से ओतप्रोत बंगाल की पावन माटी को सादर प्रणाम करता हूँ। अपनी अद्‌भुत कला के साथ इस माटी से बनी देवी दुर्गा की प्रतिमाओं में दिव्यता का संचार करने वाले बंगाल के मूर्तिकारों को भी मैं नमन करता हूँ। बंगाल की कला और संस्कृति विभिन्न रूपों में फली-फूली है, चाहे वह चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य या रंगमंच के माध्यम से हो।

10. पश्चिम बंगाल के फिल्म निर्माताओं, संगीतकारों, गायकों आदि ने हिंदी फिल्म उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विश्व-सिनेमा में विशिष्ट सम्मान प्राप्त करने वाले भारत-रत्न श्री सत्यजीत राय तथा महानायक श्री उत्तम कुमार को कोई भी संवेदनशील व्यक्ति भूल नहीं सकता।

11. केवल बंगाल ही नहीं, अपितु पूरे देश के खेल-प्रेमियों के हृदय में बसने वाले क्रिकेटर श्री सौरभ गांगुली 'दादा' ने अपने दबदबे से क्रिकेट जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है।

12. पश्चिम बंगाल ने न केवल व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, बल्कि हमारे देश के संसदीय लोकतंत्र को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बंगाल ने देश को अनेक जाने-माने राजनीतिक नेता दिए, जिन्होंने लोकतांत्रिक आदर्श के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। पंडित श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान को हम भूल नहीं सकते।

भारत-रत्न से सम्मानित हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी का भारतीय राजनीति में अप्रतिम योगदान रहा है। गत वर्षों में राजस्थान विधान सभा में मुझे उनके साथ मंच साझा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। श्री मुखर्जी का बीरभूम स्थित अपने गांव मिराटी से निरंतर संपर्क में रहना इस बाद का द्योतक है कि बंगाल के लोग सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद भी अपनी माटी से जुड़े रहते हैं।

इसी विशेषता के लिए मैं बंगाल के सुसंस्कृत और प्रबुद्ध लोगों की भावना और संस्कृति की सराहना किये बिना नहीं रह सकता। बंगाल के लोगों ने सामाजिक न्याय, समानता तथा आत्मसम्मान के आदर्शों को सदैव प्राथमिकता दी है।

13. देवियो और सज्जनो,

प्रसन्नता की बात है कि असम में बंगाली समाज के लोगों ने चिकित्सा, कला, फिल्म, रंगमंच, इतिहास, विरासत, पत्रकारिता, न्यायपालिका सहित अनेक क्षेत्रों में स्वयं को प्रतिष्ठित किया है।

असम और विशेषकर गुवाहाटी में बड़ी संख्या में बांग्लाभाषी लोग रहते हैं। नवरात्रि के अवसर पर असम के हरेक नगर एवं उपनगर में दुर्गा पूजा महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सार्वजनिक दुर्गा पूजा समितियों में से कुछ समितियां तो बरसों पुरानी हैं।

14. भारतीय स्वतंत्रता के बाद एक कल्याणकारी राज्य के रूप में पश्चिम बंगाल की अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादन तथा छोटे एवं मध्यम आकार के उद्यमों पर आधारित है।

असम और पश्चिम बंगाल कई क्षेत्रों में एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। दोनों राज्यों के चाय बागान अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण बेहतरीन चाय उत्पादक क्षेत्र हैं। इन राज्यों का चाय उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

असम और पश्चिम बंगाल दोनों राज्यों ने अपनी-अपनी विशिष्टता से भारत के विचार और पहचान को आकार दिया है।

असम ने अपनी भाषा, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक विरासत के साथ **'भारत के विचार की शुद्धता'** को काफी हद तक बनाए रखा है। दूसरी ओर, बंगाल ने **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** के विचार को न केवल संरक्षित किया है, बल्कि कई शताब्दियों तक उथल-पुथल के बावजूद इसे अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया है।

15. देवियो और सज्जनो,

आइए, हम सब मिलकर राष्ट्र की समृद्धि और खुशहाली के लिए विरासत का महोत्सव मनाएँ और एक प्रगतिशील एवं सामंजस्यपूर्ण भारत के निर्माण की दिशा में काम करें तथा **'एक भारत श्रेष्ठ भारत'** अभियान के लिए प्रधानमंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए **'समर्थ भारत सक्षम भारत'** के निर्माण का संकल्प लें।

16. आज के इस समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशेष पहचान बनाने वाले बंगाल के प्रबुद्ध एवं प्रतिभाशाली लोगों के सान्निध्य तथा अपने प्रति स्नेह, उत्साह और आदर से मैं अभिभूत हूँ। आप सभी महानुभावों को मैं विशेष धन्यवाद देता हूँ।

इस समारोह की मधुर स्मृतियां मेरे मानस-पटल पर सदैव अंकित रहेंगी। इसी भावना के साथ मैं बंगाल के सभी निवासियों के स्वर्णिम भविष्य की मंगल-कामना करता हूँ और अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

धन्यवाद।

जय हिंद।

जय असम।

जय पश्चिम बंगाल॥

विष्णु प्रसाद राभा

आज 20 जून को असम की कला-संस्कृतिक के प्रतिक कलागुरु विष्णु प्रसाद राभा जी की पुण्यतिथि मनाई जा रही है। मैं उनकी 55वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें नमन करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। बिष्णु प्रसाद राभा जी क ऐसे सांस्कृतिक व्यक्ति थे, जिन्हें संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य के साथ-साथ राजनीतिक सक्रियता के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। लोगों के सांस्कृतिक आंदोलन के पैरोकार के रूप में, उन्होंने शास्त्रीय और लोक सांस्कृतिक परंपराओं की विभिन्न शैलियों से बहुत अधिक आकर्षित किया। उन्हें असम की संस्कृति के प्रवर्तक थे, इसलिए लोग उन्हें प्यार से 'कलागुरु' कहते हैं।